ASTROICA.COM

Saturn Transit Report

SOMAL SINGH

June 16, 2005, 03:08 AM

Jaipur

ॐ भग भवाय विद्महे मृत्यु-रूपाय धीमहि
तन्नो शौरीहि प्रचोदयात्॥

जन्म विवरण

नाम	Somal Singh
जन्म तिथि	16 June, 2005
जन्म का समय	03:08 am
जन्म तारीख	गुरुवार
दिन/रात	रात
जन्म स्थान	Jaipur
अक्षांश एवं देशांतर	26.9196, 75.7878
समय क्षेत्र सुधार	स्टैण्डर्ड टाइम (+05:30)
अयनांश	लाहिड़ी
जेंडर (लिंग)	पुरुष

वर्ष 2005, 16 जून, गुरुवार को उत्तरायण के समय, सूर्योदय के पश्चात 03:08 AM बजे 53 घटी (नाझिका) और 48 विघटी (विनाझिका) पर, नवमी तिथि, बालव करण, व्यातीपात नित्य योग, हस्त नक्षत्र के पहले पद में, मेष लग्न, मिथुन सूर्य राशि और कन्या चन्द्र राशि में इस लड़का का जन्म हुआ।

नक्षत्र	चंद्र राशि	सूर्य राशि
हस्त	कन्या	मिथुन
पद : 1	वर्गो	जेमिनी

पंचांग का विवरण

नीचे दी गई तालिका Somal Singh के जन्म समय के पंचांग विवरण को दर्शाती है।

तिथि (चंद्र दिवस)	नवमी
नक्षत्र	हस्त (1/4)
नक्षत्र प्रभु	चंद्र
योग	व्यातीपात
करण	बालव
चंद्र राशि	कन्या
चंद्र राशि स्वामी	बुध
सूर्य राशि	मिथुन
सूर्य राशि स्वामी	बुध
राशि चक्र चिन्ह (पश्चिमी प्रणाली)	जेमिनी
आयन	उत्तरायण
ऋतु	ग्रीष्म
हिंदू माह (अमांत)	ज्येष्ठ
सूर्योदय	05:36 am
सूर्यास्त	07:18 pm
चंद्रोदय	01:32 pm
चंद्रास्त	01:33 am

नक्षत्र, राशि, और अन्य विवरण	
लग्न राशि	मेष
नवमांश	तुला
योग कारक	Nil
आत्म कारक	लग्न
अमात्य कारक	शुक्र
लग्न आरूढ़	कुम्भ
धन आरूढ़	मीन
चंद्र-अवस्था	1/12
चन्द्र-वेला	2/36
चन्द्र-क्रिया	3/60
दग्ध राशि	सिंह और वृश्चिक
देवता	सूर्य
गण	देव गण
चिह्न	हाथ
पशु चिन्ह	भेंस
नाड़ी	वात
रंग	गहरा हरा
सर्वोत्तम दिशा	दक्षिण
शब्दांश	Pu, Sha, Na, Tha
जन्म रत्न	मोती (मुक्ता)
योनि	स्त्री
शत्रु	घोडा
वृक्ष	आमड़ा
भूत	अग्नि
गोत्र	पुलह

आपकी कुंडली

नीचे उत्तर भारतीय शैली में Somal Singh के लिए लग्न, नवमांश और चंद्रमा चार्ट दिए गए हैं।

लग्न चार्ट

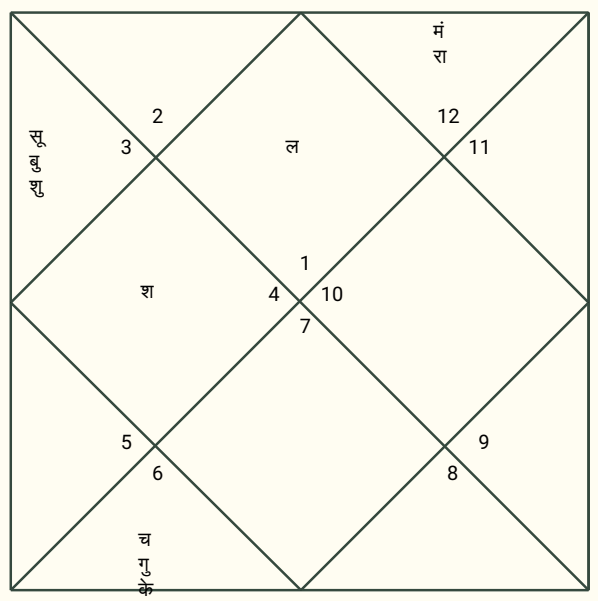

नवमांश चार्ट

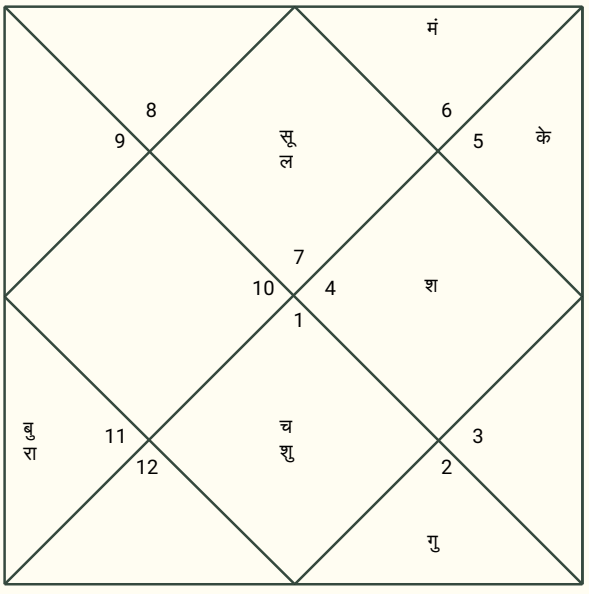

चंद्र चार्ट

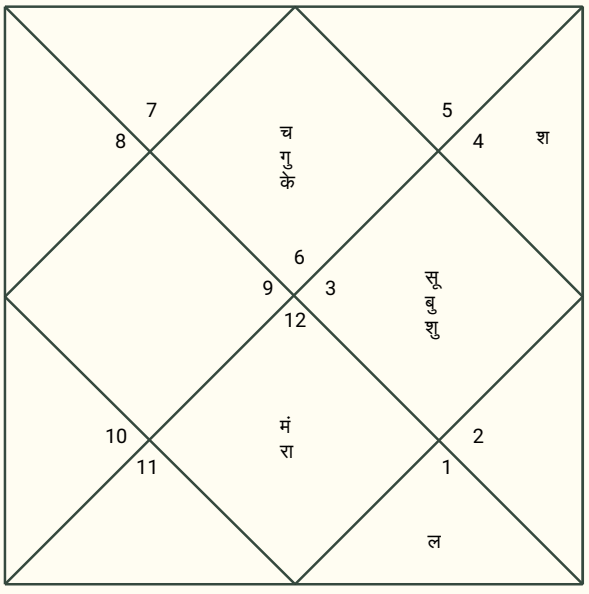

वेदिक ग्रह स्थिति (साइडरियल)

वैदिक ज्योतिष में, ग्रहों की स्थिति का निर्धारण निरयन रेखांश पर निर्भर करता है, जहाँ "निर-अयन" का अर्थ है कोई गति नहीं। यहाँ, अयनांश, गतिमान वसंत विषुव और सटीक नक्षत्र शून्य मेष बिंदु के बीच सटीक डिग्री अंतर, पश्चिमी ज्योतिष में उपयोग किए जाने वाले सायन रेखांश से घटाया जाता है। अयनांश की गणना के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रथाओं में से, यहाँ उपयोग की जाने वाली विधि चित्रपक्ष है।

चित्रपक्ष लाहिड़ी : 23° 55‘ 59“

नीचे दी गई तालिका दर्ज की गई तिथि, समय, और स्थान पर ग्रहों की स्थिति दर्शाती है (ग्रहों की निरयण देशांतर)

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
रवि	60° 55‘ 54“	0° 55‘ 54“	मिथुन	बुध	भरणी	मंगल
चंद्र	160° 32‘ 22“	10° 32‘ 22“	कन्या	बुध	मृगशीर्षा	चंद्र
बुध	75° 19‘ 7“	15° 19‘ 7“	मिथुन	बुध	चित्रा	राहु
शुक्र	81° 2‘ 40“	21° 2‘ 40“	मिथुन	बुध	धनिष्ठा	गुरू
मंगल	338° 42‘ 3“	8° 42‘ 3“	मीन	गुरू	उत्तर फाल्गुनी	शनि
गुरू	165° 9‘ 56“	15° 9‘ 56“	कन्या	बुध	मृगशीर्षा	चंद्र
शनि	92° 15‘ 46“	2° 15‘ 46“	कर्क	चंद्र	धनिष्ठा	गुरू
लग्न	21° 45‘ 25“	21° 45‘ 25“	मेष	मंगल	आद्रा	शुक्र
राहु ℞	355° 36‘ 15“	25° 36‘ 15“	मीन	गुरू	विशाखा	बुध
केतु ℞	175° 36‘ 15“	25° 36‘ 15“	कन्या	बुध	पुनर्वसु	मंगल

℞ वक्री को दर्शाता है

नीचे दी गई तालिका राशि चक्र में ग्रहों की स्थिति को उनके पश्चिमी नामों के साथ दर्शाती है।

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
सूर्य	60° 55‘ 54“	0° 55‘ 54“	जेमिनी	बुध	भरणी	मंगल
चंद्र	160° 32‘ 22“	10° 32‘ 22“	वर्गो	बुध	मृगशीर्षा	चंद्र
बुध	75° 19‘ 7“	15° 19‘ 7“	जेमिनी	बुध	चित्रा	राहु
शुक्र	81° 2‘ 40“	21° 2‘ 40“	जेमिनी	बुध	धनिष्ठा	गुरू
मंगल	338° 42‘ 3“	8° 42‘ 3“	पाइसीज़	गुरू	उत्तर फाल्गुनी	शनि
गुरू	165° 9‘ 56“	15° 9‘ 56“	वर्गो	बुध	मृगशीर्षा	चंद्र
शनि	92° 15‘ 46“	2° 15‘ 46“	कैंसर	चंद्र	धनिष्ठा	गुरू
लग्न	21° 45‘ 25“	21° 45‘ 25“	एरीज़	मंगल	आद्रा	शुक्र
राहु ℞	355° 36‘ 15“	25° 36‘ 15“	पाइसीज़	गुरू	विशाखा	बुध
केतु ℞	175° 36‘ 15“	25° 36‘ 15“	वर्गो	बुध	पुनर्वसु	मंगल

℞ वक्री को दर्शाता है

विंशोत्तरी दशा

वैदिक ज्योतिष के अनुसार विंसोत्तरी दशा सबसे महत्वपूर्ण और सर्वोच्च दशा है। 120 वर्षों की अवधि में 9 दशाएँ विभाजित हैं। प्रत्येक दशा का एक शासक ग्रह होता है और किसी व्यक्ति का जीवन सीधे तौर पर उस विशेष दशा को नियंत्रित करने वाले उसके शासक ग्रह की प्रकृति से प्रभावित होता है। पहली महादशा किसी दिए गए नक्षत्र में जन्म के चंद्रमा की स्थिति से निर्धारित होती है।

जन्म समय से शेष बचा हुआ दशा काल : 9 years, 7 months and 3 days

नीचे विभिन्न महादशाओं का प्रारंभ समय और समाप्ति समय दिया गया है

प्रभु	शुरुआत	समापन
चंद्र	19-Jan, 2005	19-Jan, 2015
मंगल	19-Jan, 2015	19-Jan, 2022
राहु	19-Jan, 2022	19-Jan, 2040
गुरू	19-Jan, 2040	19-Jan, 2056
शनि	19-Jan, 2056	19-Jan, 2075
बुध	19-Jan, 2075	19-Jan, 2092
केतु	19-Jan, 2092	19-Jan, 2099
शुक्र	19-Jan, 2099	20-Jan, 2119
सूर्य	20-Jan, 2119	20-Jan, 2125

शनि भिन्नाष्टकवर्ग

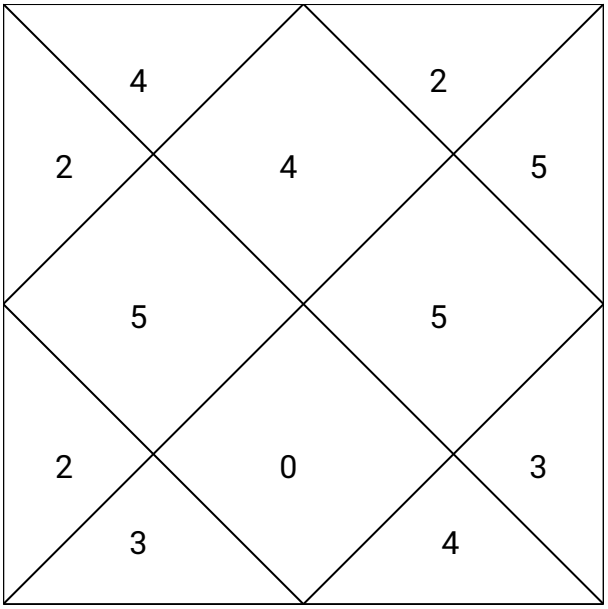

अंक: 39

	सूर्य	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	लग्न	प्राप्तांक
मेष	1	0	1	1	0	0	0	1	4
वृषभ	0	0	1	1	1	0	1	0	8
मिथुन	1	0	0	0	0	0	0	1	10
कर्क	1	1	0	0	1	1	0	1	15
सिंह	0	0	0	0	1	1	0	0	17
कन्या	1	0	0	0	0	0	1	1	20
तुला	0	0	0	0	0	0	0	0	20
वृश्चिक	0	1	1	1	0	0	1	0	24
धनुष	1	0	0	0	1	0	1	0	27
मकर	1	0	1	0	1	1	0	1	32
कुम्भ	0	1	1	0	1	1	0	1	37
मीन	1	0	1	0	0	0	0	0	39
प्राप्तांक	7	3	6	3	6	4	4	6	39

सर्वाष्टकवर्ग चार्ट

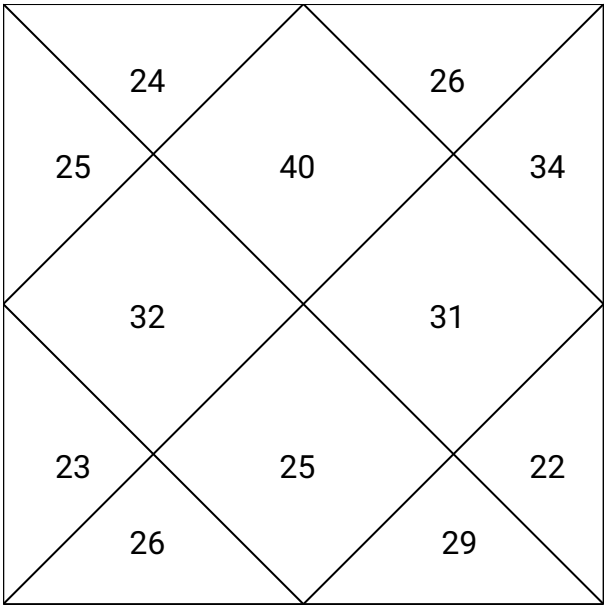

अंक: 337

	सूर्य	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	प्राप्तांक
मेष	4	5	8	7	6	6	4	40
वृषभ	4	2	4	6	2	2	4	24
मिथुन	4	4	4	3	3	5	2	25
कर्क	5	3	5	5	3	6	5	32
सिंह	2	5	4	5	3	2	2	23
कन्या	3	6	3	3	2	6	3	26
तुला	3	2	6	4	4	6	0	25
वृश्चिक	4	4	4	5	4	4	4	29
धनुष	3	6	2	2	1	5	3	22
मकर	5	4	4	5	4	4	5	31
कुम्भ	6	3	7	5	4	4	5	34
मीन	5	5	3	2	3	6	2	26
कुल	48	49	54	52	39	56	39	337

आपकी जन्म कुंडली में शनि का विश्लेषण

शनि, जिसे शनि देव, सूर्यपुत्र या मंद के नाम से जाना जाता है, अनुशासन, कर्म और न्याय से जुड़े एक प्रभावशाली ग्रह के रूप में प्रतिष्ठित है। नवग्रहों में, शनि को परीक्षा और कर्मफल के ग्रह के रूप में पूजा जाता है। बृहद् पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार, शनि का दिव्य समकक्ष भगवान ब्रह्मा हैं, जो सृष्टि के रचनाकार और समस्त ब्रह्मांडीय ज्ञान के स्रोत हैं। पंचभूत तत्वों में, शनि वायु तत्व का स्वामी है और इसे एक शक्तिशाली पुरुष ऊर्जा के रूप में देखा जाता है।

शनि को जाति व्यवस्था में शूद्र है, सेवा और परिश्रम का प्रतीक माना जाता है, जो श्रमिक वर्ग और कष्ट सहने वालों का प्रतिनिधित्व करता है। तमसिक गुणों से युक्त, शनि का स्वभाव कठोर, निष्क्रिय और अनुशासनप्रिय होता है।

ग्रहों के संबंधों में, शनि बुध और शुक्र के प्रति मित्रवत रहता है, जबकि सूर्य, चंद्र और मंगल को शत्रु मानता है। वहीं, गुरु के प्रति इसकी तटस्थ दृष्टि होती है।

शनि मकर और कुंभ राशि का स्वामी है। यह तुला राशि में उच्च का होता है, जहाँ इसकी शक्ति सर्वोत्तम होती है, जबकि मेष राशि में नीच का होकर कमजोर स्थिति में आ जाता है। कुंडली में एक मजबूत शनि व्यक्ति को धैर्य, सहनशक्ति और परिश्रम से सफलता प्राप्त करने का वरदान देता है। इसके विपरीत, यदि शनि कमजोर या पीड़ित हो, तो यह अवरोध, देरी और संघर्ष लेकर आता है, जिससे व्यक्ति को धैर्य और सहनशक्ति की कड़ी परीक्षा से गुजरना पड़ता है।

आपकी जन्म कुंडली में, शनि लग्न से 4th भाव में, चन्द्रमा से 11th भाव में,, दुर्बल में, में, कर्क में, धनिष्ठा नक्षत्र के चौथे पद में, और शनि क्रमशः पहले और छटे भाव में लग्न और केतु को देख रहा है तथा क्रमशः

चतुर्थ भाव में शनि

चतुर्थ भाव में शनि की स्थिति अनुकूल नहीं मानी जाती, किन्तु यह कभी-कभी जातक को जीवन के कुछ क्षेत्रों में सफलता प्रदान कर सकती है। इन जातकों के अपने सम्बन्धियों परिवार के सदस्यों के साथ सम्बन्ध खराब हो सकते हैं, तथा वे परिवार के सदस्यों से वंचित भी हो सकते हैं। यह स्थिति जातक की माता के लिए कष्ट का कारण बन सकती है, तथा ऐसे जातक सामाजिक नियमों विशेषतः जाति से सम्बन्धित नियमों का पालन नहीं कर सकते। यह स्थिति जातक को बेचैन व असंतुष्ट भी बना सकती है, तथा साथ ही जातक को बीमार भी बना सकती है। शनि की अशुभ स्थिति जातक के लिए विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाओं का कारण बन सकती है, इसलिए उसे हर समय सावधान रहना चाहिए।

शनि गोचर

गोचर चार्ट

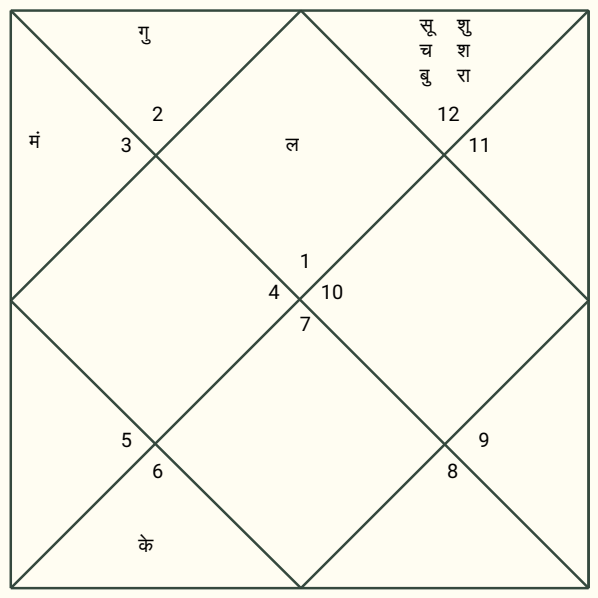

शनि March 29, 2025 से June 03, 2027 तक मीन राशि में गोचर कर रहा है। यह गोचर आपकी जन्म राशि कन्या से गिने जाने वाले सातवे भाव से होकर गुजरेगा। शनि आपके लिए ताम्र मूर्ति है, जिसके परिणामस्वरूप इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में मध्यम कमी आएगी।

शनि मीन राशि में 2 years, 2 months and 4 days तक रहेगा और 2 बार वक्री होगा। पहला वक्री होना July 13, 2025 से शुरू होगा और November 28, 2025 पर मीन राशि में समाप्त होगा और 4 months and 14 days तक चलेगा। दूसरा प्रतिगमन July 27, 2026 को शुरू होगा, और मेष राशि में December 11, 2026 को समाप्त होगा, जो 4 months and 14 days तक चलेगा।

शनि का अगला गोचर June 03, 2027 को होगा जब शनि मेष राशि में चला जाएगा।

शनि का 7 भाव से गोचर अनुकूल परिणाम देता है, जो राशि के मध्य बिंदु के आसपास अपने चरम प्रभाव पर पहुँचता है। शनि आपके लिए ताम्र मूर्ति है, जिसके परिणामस्वरूप इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में मध्यम कमी होगी।

शनि आपके जन्म राशि से सप्तम भाव में गोचर कर रहा है

चंद्र राशि से सप्तम भाव में शनि के गोचर में, व्यक्ति को कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है व साथ ही असफलता प्राप्त हो सकती है, किन्तु दृढ़ता व धैर्य के साथ व्यक्ति इन परेशानियों को दूर कर सकता है। इस दौरान व्यक्ति को कुछ अस्थाई समस्याओं का सामना भी करना पड़ सकता है, जैसे आश्रय की हानि, जीवनसाथी से विवाद व मित्रों आदि से सम्बन्ध खराब हो सकते हैं। व्यक्ति को कभी-कभी स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है व मानसिक परेशानी भी उत्पन्न हो सकती है, जिससे डर उत्पन्न हो सकता है व चिंता हो सकती हैं।

व्यक्ति को धन से सम्बन्धित समस्या हो सकती है तथा साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ हो सकती हैं। इस दौरान व्यक्ति की पदावनति हो सकती है अथवा अवांछित स्थानांतरण हो सकता है। इस अवधि में व्यक्ति के साथ दुर्घटनाएँ हो सकती हैं व मवेशियों से सम्बन्धित समस्याएँ भी आ सकती हैं तथा साथ ही धन -संपत्ति की हानि भी हो सकती है। इस दौरान व्यक्ति का अपमान हो सकता है व साथ वह आर्थिक तंगी का भी सामना कर सकता है, जिससे अस्थायी गरीबी हो सकती है।

इस दौरान व्यक्ति को सिरदर्द व थकान जैसी स्वास्थ्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है, साथ ही परिचितों की मृत्यु भी हो सकती है तथा व्यक्ति के जीवन में अलगाव या विस्थापन की भावनाएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। कुल मिलाकर इस गोचर के दौरान, व्यक्ति अपने अनुभव से मज़बूत बन सकता है व इन बाधाओं को धैर्य व अनुकूलनशीलता से दूर कर सकता है।

शनि के मीन राशि में गोचर का प्रभाव

मेष लग्न से संबंधित जातकों के लिए यह गोचर व्यय भाव से होगा, यह बृहस्पति से संबंधित मीन राशि के अधिकार क्षेत्र में है। इस गोचर द्वारा जातक को किसी विदेश की जमीन पर अच्छे संबंध बनाने का अवसर प्राप्त हो सकता है लेकिन इसमें बहुत अधिक खर्च होने की संभावना है। हालांकि, ऐसे भी अवसर बन सकते हैं जिनके द्वारा कभी-कभी कुछ अप्रत्यक्ष माध्यमों से जातक को लाभ कमाने का अवसर प्राप्त हो सकता है जिससे उसकी आर्थिक स्थिति में स्थिरता आ सकती है, वृद्धि हो सकता है। फिर भी, इस चरण के दौरान पिता या परिवार में आधिकारिक स्थान रखने वाले परिजनों के जीवन में समस्याएं भी आ सकती हैं, कुछ समस्याएं सरकारी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं, इसलिए इस दौरान जातक को यह कोशिश करनी चाहिए कि किसी भी समस्या का समाधान करने में विशेष सावधान रहे जिससे कोई नुकसान न हो।

तीसरी दृष्टि: शनि की दृष्टि वृषभ राशि के दूसरे भाव यानी धन से संबंधित भाव पर प्रभाव डालती है और यह शुक्र के अधिकार क्षेत्र में आता है। इसलिए, जातक इस स्थिति में बहुत अधिक धन प्राप्त कर सकता है, उसे पारिवारिक समृद्धि प्राप्त हो सकती है, बहुत बड़ी-बड़ी सफलताओं को प्राप्त करने का अवसर मिल सकता है और भाग्योदय जैसे अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

सातवीं दृष्टि: शनि की दृष्टि छठवें भाव यानी शत्रु भाव पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है और यह भाव कन्या राशि से संबंधित है और यह बुध के अधिकार क्षेत्र में आता है। ऐसी स्थिति में बनने वाले संयोग के दौरान, छठे भाव द्वारा नियंत्रित जो पक्ष होते हैं उन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की स्थिति बनती है और इसका अर्थ यह है कि जातक को अपने जीवन में चल रहे संघर्षों में सफलता प्राप्त हो सकती है, विरोधियों या शत्रुओं पर विजय प्राप्त हो सकती है और बीमारियों से लड़ने की क्षमता मजबूत हो सकती है।

दसवीं दृष्टि: इस तरह का मेल या संरेखण नौवें भाव यानी धर्म भाव को प्रभावित करता है और यह धनु राशि के अंतर्गत या प्रभाव में आता है। यह गुरु यानी बृहस्पति के नियंत्रण क्षेत्र में आता है और इस तरीके के संरेखण से भाग्योदय का संकेत मिलाता है और जातक अपनी कड़ी मेहनत द्वारा अपने भाग्य को बदल सकता है। साथ ही, जातक को संघर्षों का सामना करने के बाद भी अपने धर्म का पालन करते रहना होगा जिससे अंत में उसे सम्मान और प्रतिष्ठा दोनों की प्राप्ति होगी।

शनि, जो किसी एक राशि में भ्रमण करने में लगभग ढाई वर्ष का समय लेता है, अपने गोचर के दौरान लगातार समान प्रभाव नहीं देता। एक राशि दो और आधे नक्षत्रों के भाग मिलकर बनी होती है, और शनि इन नक्षत्रों से विभिन्न अंतरालों पर गुजरता है, जिससे शनि के गोचर के प्रभावों में उतार-चढ़ाव आता है।इसके अलावा, अष्टकवर्ग सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक राशि को आठ कक्षाओं में विभाजित किया जाता है, जो सात ग्रहों और लग्न से संबंधित होती हैं। इनका क्रम इस प्रकार होता है – शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा और लग्न।साथ ही, वक्री गति के प्रभाव, गोचर वेध या विपरीत वेध, और नक्षत्र वेध भी गोचर करते हुए ग्रह द्वारा दिए गए परिणामों को प्रभावित करते हैं। नीचे शनि के गोचर से संबंधित भविष्यवाणियां और तिथियां दी गई हैं, जो उपरोक्त जानकारी पर आधारित हैं।

शनि दोष

शनि दोष उस चुनौतीपूर्ण स्थिति को दर्शाता है जो शनि के विशेष गोचर स्थानों के कारण उत्पन्न होती है, जिसे जन्म राशि (जन्म के समय चंद्रमा की राशि) से गणना की जाती है। ये चुनौतियाँ मुख्य रूप से शनि के प्रभावों से जुड़ी होती हैं, जैसे विभिन्न कार्यों में देरी और बाधाएँ। शनि के गोचर प्रभावों को चार अलग-अलग चरणों में विभाजित किया जाता है, जो जन्म राशि के संबंध में उसके भाव पर निर्भर करता है।

जब शनि जन्म राशि से चौथे भाव में गोचर करता है, तो इस अवधि को अर्धाष्टम शनि या कभी-कभी कंटक शनि कहा जाता है। इस समय, व्यक्ति को हल्की चुनौतियों या रुकावटों का सामना करना पड़ सकता है। इससे कठिन अवस्था तब आती है जब शनि जन्म राशि से सातवें भाव में गोचर करता है, जिसे भी कंटक शनि कहा जाता है। इस दौरान, चौथे घर की तुलना में अधिक गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। हालांकि, इनमे सबसे कठिन अवस्था अष्टम शनि मानी जाती है, जो तब होती है जब शनि जन्म राशि से आठवें भाव में गोचर करता है। यह अवधि अत्यधिक कठिनाइयों और बढ़ी हुई बाधाओं से भरी होती है, जिससे इसे अर्धाष्टम शनि, कंटक शनि और अष्टम शनि के तीनों चरणों में सबसे चुनौतीपूर्ण माना जाता है।

इन गोचरों के अतिरिक्त, शनि का सबसे अशुभ प्रभाव शनि साढ़े साती के दौरान देखा जाता है, जो लगभग साढ़े सात वर्षों तक चलता है। यह अवधि तब आती है जब शनि जन्म राशि से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में गोचर करता है। साढ़े साती के प्रभाव इसके तीन चरणों में विभाजित होते हैं। उदय चरण, जो जन्म राशि से बारहवें भाव में गोचर के दौरान होता है, और अस्त चरण, जो दूसरे भाव में गोचर के दौरान होता है, आमतौर पर तुलनात्मक रूप से हल्के प्रभाव देते हैं। हालांकि, चरम चरण, जब शनि जन्म राशि में गोचर करता है, साढ़े साती का सबसे कठिन और अशुभ चरण माना जाता है, जिसमें व्यक्ति को अत्यधिक कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

#	शनि दोष	सक्रिय है
1	अर्ध-अष्टम शनि	❌
2	कंटक शनि	✅
3	अष्टम शनि	❌
4	शनि साढ़े साती	❌

शनि के विभिन्न कक्षों से पारगमन

प्रत्येक ग्रह एक विशिष्ट अवधि के लिए एक राशि से होकर गुजरता है। चिन्ह को आठ बराबर खंडों में विभाजित किया गया है, जिन्हें काक्ष्य कहा जाता है। प्रत्येक कक्ष एक विशिष्ट ग्रह के आधिपत्य में शासित होता है, इस क्रम में शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा और अंत में लग्न क्रम से शासन करता है।

शनि के भिन्नाष्टकवर्ग में, मीन राशि के 2 अंक हैं। ये 2 अंक सूर्य और बुध द्वारा योगदान किए गए हैं।

जब शनि दो बिन्दुओं वाली राशि से होकर गोचर करता है, तो यह जातक के लिए कठिनाइयों व परेशानियों से भरी एक अवधि हो सकती है। इस अवधि जातक को अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए तथा किसी भी चिकित्सकीय आपात स्थिति से बचने के लिए आवश्यक सावधानी बरती जानी चाहिए। यदि जातक के विरुद्ध कोई कानूनी विवाद या आरोप चल रहे हैं, तो जातक को इन मामलों पर विशेष ध्यान देना चाहिए व उन्हें कम से कम जोखिम के साथ हल करने का प्रयास करना चाहिए, ताकि किसी भी कानूनी आरोप या कारावास की संभावनाओं से बचा जा सके। इसके अतिरिक्त, जातक को वित्तीय संसाधनों का उपयोग बुद्धिमानी से करना चाहिए। यह अवधि जातक की सहनशक्ति और धैर्य की परीक्षा लेगी, इसलिए उसे इस समय सावधानीपूर्वक और धैर्य के साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

जब शनि सूर्य और बुध द्वारा शासित कक्ष से होकर गुजरता है, तो यह मीन राशि में 7th भाव से संबंधित अधिकतम परिणाम प्रकट करता है।

जब शनि रेखाओं के साथ चंद्रमा/जन्म राशि में होता है, तो इससे जातक को कृषि और लोहे के व्यापार के क्षेत्र में धन, समृद्धि व लाभ प्राप्त हो सकता है। इसके अलावा, इस अवधि में जातक को कानूनी मामलों और मुकदमों में विजय, पैतृक संपत्ति से लाभ और विरासत की प्राप्ति हो सकती है।

इस अवधि में जातक को सरकार का अटूट सहयोग प्राप्त होगा, वह अपने विरोधियों और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा, पुण्यशील व्यक्तियों की संगति में रहेगा तथा उसकी धार्मिक आस्था में वृद्धि होगी। कृषि का क्षेत्र जातकों के लिए विशेष लाभकारी क्षेत्र होगा तथा इससे वे समृद्धि प्राप्त करेंगे, जिससे जातकों की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित होगी।

शनि का किसी कक्षा में बिंदु के साथ गोचर होने पर, जातक को पैतृक संपत्ति से धन की प्राप्ति होगी तथा साथ ही प्रभावशाली व धर्मपरायण व्यक्तियों से सहयोग प्राप्त होगा। इस अवधि में जातक को धोखेबाजों पर विजय प्राप्त होगी, भूमि अधिग्रहण होगा, आध्यात्मिक उन्नति होगी व साथ ही भौतिक सुख-सुविधाओं में भी वृद्धि होगी, जिसमें शक्तिशाली संस्थानों से अनुग्रह और लाभ भी शामिल हैं।

जब शनि चंद्र, शुक्र, मंगल, गुरू, शनि, और लग्न द्वारा शासित कक्ष से होकर गुजरता है, तो यह मीन राशि में 7th भाव से संबंधित परिणामों का केवल एक हिस्सा ही सामने लाता है।

जब शनि शून्य रेखा अथवा केवल एक या दो रेखाओं के साथ स्थित होता है, तो इससे महत्वपूर्ण धन हानि हो सकती है, भावनात्मक हानि हो सकती है तथा साथ ही जातक स्वास्थ्य से सम्बन्धित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। जातक मानसिक तौर पर परेशान हो सकता है व शारीरिक शारीरिक तौर पर पीड़ा व दुख का अनुभव कर सकता है। अतः, इस अवधि में जातक को अत्यधिक धैर्य व सहनशीलता की आवश्यकता होती है।

इस अवधि में जातक पर हमले हो सकते हैं तथा जातक को शारीरिक समस्याएँ हो सकती हैं, तथा वे दुर्घटनाओं का शिकार हो सकते हैं। इस अवधि में जातक को सरकार से भय बना रहता है तथा उन्हें निरंतर कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त, जातक को धन व वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन समझदारी से व सावधानीपूर्वक करना चाहिए, जिससे किसी भी संभावित आर्थिक समस्या से बचा जा सके, क्योंकि इस गोचर के दौरान वित्तीय हानि और आर्थिक अस्थिरता की संभावना बनी रहती है।

जब कोई ऐसी राशि लग्न के रूप में उदित होती है जिसमें सबसे कम बिंदु होते हैं, तो जातक को जीवन के प्रत्येक चरण में गंभीर परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह प्रभाव विशेष रूप से मारक दशा के दौरान या जब सूर्य हर महीने इस राशि को पार करता है, अधिक तीव्र होता है, जिससे जातक के जीवन में परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं, जिसमें जीवन का जोखिम भी शामिल हो सकता है। बिन्दुओं से रहित कक्षा से गोचर परेशानियों में वृद्धि करता, जिससे समस्याएँ, चिंता, भूमि हानि हो सकती है तथा जातक के सम्बन्ध खराब हो सकते हैं।

पहले काक्ष्य

शनि के कक्ष में शनि का गोचर करना बहुत सी चुनौतियाँ सामने ला सकता है, जिससे व्यक्तिगत विकास और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ सकती है। इस समय के दौरान, जातक को दूसरों के साथ असहमति की स्थिति या तालमेल बैठाने में मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। इससे कुछ समय के लिए संपति या अन्य संसाधनों में गिरावट और निराशा प्राप्त हो सकती है। ये पल धैर्य़ और स्व-जागरूकता की सीख देते हैं, जिससे अंदरूनी शक्ति विकसित करने और उज्ज्वल भविष्य की तैयारी करने में मदद मिलती है।

शनि के पहले कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
29-Mar-2025	02-May-2025
28-Sep-2025 ℞	25-Jan-2026

दूसरे काक्ष्य

शनि के गुरु के कक्ष में गोचर के दौरान, जातक को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है जिसमें उनके धैर्य और अंदरूनी शक्ति की परीक्षा होती है। परिवार में कुछ समय के लिए अधिकार या पूँजी से सबंधित कुछ मुद्दों के कारण गलतफहमियाँ पैदा हो सकती है। हालाँकि यह समय आत्मचिंतन और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने का है, जिससे अपने व्यक्तिगत मूल्यों को पुनः विकसित करने का मौका मिले। इन अनुभवों से ज्ञान में वृद्धि और भविष्य के उद्देश्य के लिए नई भावना उत्पन्न हो सकती है।

गुरू के दूसरे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
02-May-2025	27-Jun-2025
29-Jul-2025 ℞	28-Sep-2025
25-Jan-2026	01-Mar-2026

तीसरे काक्ष्य

शनि के मंगल के कक्ष में गोचर के दौरान, जातक को बहुत सी कठिनाईयों जैसेकि परिवार में अनापेक्षित हानि या चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य विशेष रूप से सिरदर्द या छोटी चोट लगने की स्थिति में ध्यान देने की आवश्यकता है। संपति या पूँजी से संबधित कुछ परेशानियाँ भी हो सकती हैं। यह समय धैर्य और स्व-जागरूकता को बढ़ाने वाला भी है, जिससे जातक को अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का अवसर प्राप्त हो। एकाग्रता और सकारात्मकता बनाए रखकर, जातक इन चुनौतियों का सामना कर सकता है और भविष्य में सफलता प्राप्त करने के लिए शक्तिशाली और बुद्धिमान बन सकता है।

मंगल के तीसरे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
27-Jun-2025	29-Jul-2025
01-Mar-2026	31-Mar-2026

चौथे काक्ष्य

सूर्य की कक्षा से शनि के गोचर के दौरान उन व्यक्तियों को उपलब्धि व सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं, जिन्हें सरकारी सहायता या प्रभावशाली लोगों से लाभ हो सकता है, जिससे व्यक्तियों को धन लाभ हो सकता है अथवा व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। व्यक्ति को पूर्व में चली आ रही परेशानियों से लाभ प्राप्त हो सकता है या प्रतिद्वंद्वियों से भी कुछ लाभ भी प्राप्त हो सकते हैं। इस अवधि में व्यक्ति की खुशी में वृद्धि हो सकती है व व्यक्ति को जीवन-यापन के लिए उद्देश्य मिलता है। इस अवधि में व्यक्ति को सफलता प्राप्त होती है व साथ ही व्यक्ति विचारशील कार्यों की ओर अग्रसर होता है।

सूर्य के चौथे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
31-Mar-2026	01-May-2026
02-Nov-2026 ℞	18-Jan-2027

पांचवे काक्ष्य

शनि के शुक्र कक्ष में गोचर के दौरान, जातक को दोस्तों और करीबी-सबंधियों से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आत्मचिंतन की ओर बढ़ना होगा। यह अपने प्रियजनों के साथ सांमजस्यता बनाए रखने पर ध्यान देने और व्यक्तिगत मूल्यों के साथ मेल न खाने वाले प्रभावों से बचने का समय है। स्वास्थ्य, विशेष रूप से पूरे स्वास्थ्य के संबध में ध्यान देने की आवश्यकता है। इस समय में धैर्य और सकारात्मक सबंधों को स्वीकार करना संतुलित और मजबूत सबंधों को बनाए रखने में मददगार होगा।

शुक्र के पांचवे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
01-May-2026	10-Jun-2026
12-Sep-2026 ℞	02-Nov-2026
18-Jan-2027	28-Feb-2027

छटे काक्ष्य

बुध की कक्षा से शनि का गोचर व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक विकास और अवसर प्रदान करता है। इस अवधि में व्यक्ति को भूमि या अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है, साथ ही आपसी मित्रता के माध्यम से सहयोग में वृद्धि हो सकती है। विपरीत लिंग के साथ सम्बन्ध से व्यक्ति को कई लाभ प्राप्त हो सकते हैं। इस अवधि में व्यक्ति की आध्यात्मिकता में रूचि गहरी होगी व साथ ही व्यक्ति की नैतिक शिक्षाओं के बारे में जानने में रुचि गहरी हो सकती है। इस अवधि में व्यक्ति को दूसरों की मदद से लाभ प्राप्त हो सकता है, जिससे यह अवधि सद्भाव व लाभ की अवधी बन जाती है।

बुध के छटे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
10-Jun-2026	12-Sep-2026
28-Feb-2027	31-Mar-2027

सातवे काक्ष्य

चंद्रमा के कक्ष से शानि के गोचर के दौरान, जातक ऊर्जा में कमी के साथ अस्थाई आर्थिक या स्वास्थ्य समस्याएँ महसूस कर सकता है। आँखों में जलन या छाती की परेशानी जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। यह अवधि धीमी गति से चलने, सेहत पर ध्यान केंद्रित करने और खुद का ख्याल रखने को प्रोत्साहित करती है। धैर्य और सावधानी के साथ, शक्ति और प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखना संभव है। ऐसा कर आप इस समय को उपचार और व्यक्तिगत विकास दृष्टि से सबसे अच्छे समय में बदल सकते हैं।

चंद्र के सातवे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
31-Mar-2027	30-Apr-2027

आठवे काक्ष्य

शनि के लग्न कक्ष में गोचर के दौरान, जातक को अपनी मान्यताओं और स्व-नियंत्रण की परख करने में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। रिश्तें, पूँजी या मान-प्रतिष्ठा में समस्याएँ हो सकती है, जिससे कुछ मानसिक परेशानियाँ हो सकती हैं। यह समय आत्मचिंतन के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे जातक को आंतरिक शक्ति का विकास करने और सकारात्मक विकल्पों पर ध्यान देने में मदद मिलती है। धैर्य और अखंडता को स्वीकार कर, जातक इन अनुभवों को प्रतिरोधक क्षमता द्वारा रोक सकता है तथा लक्ष्य और विकास की मजबूत अनुभूति के साथ उभर कर ऊपर आ सकता है।

लग्न के आठवे कक्ष से होकर शनि के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
27-Feb-2025	29-Mar-2025
30-Apr-2027	03-Jun-2027

शनि नक्षत्र में गोचर

12 राशियाँ 27 नक्षत्रों के सम्मिश्रण से बनी हैं। जब कोई ग्रह किसी राशि से होकर गुजरता है, तो वह लगभग ढाई नक्षत्रों से होकर गुजरता है। नीचे इन नक्षत्रों से बृहस्पति के पारगमन की भविष्यवाणियाँ और तिथियाँ प्रस्तुत हैं:

शनि उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र में गोचर

शनि का उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र में गोचर, जो गुरू द्वारा शासित है, जो कन्या के छटे भाव में स्थित है। क्षेम तारा होने के कारण, उत्तरभाद्रपदा अच्छा प्रभाव उत्पन्न करता है।

शनि का उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र में December 27, 2024 से April 28, 2025 तक गोचर और October 04, 2025 से January 20, 2026 तक।

शनि उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में गोचर

शनि का उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में गोचर, जो शनि द्वारा शासित है, जो कर्क के चौथे भाव में स्थित है। प्रत्यक्ष तारा होने के कारण, उत्तर फाल्गुनी बुरा प्रभाव उत्पन्न करता है।

शनि का उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में April 28, 2025 से October 03, 2025 तक गोचर , January 20, 2026 से May 17, 2026 तक और October 09, 2026 से February 08, 2027 तक।

शनि विशाखा नक्षत्र में गोचर

शनि का विशाखा नक्षत्र में गोचर, जो बुध द्वारा शासित है, जो मिथुन के तीसरे भाव में स्थित है। दैवानुकूल तारा होने के कारण, विशाखा अच्छा प्रभाव उत्पन्न करता है।

शनि का विशाखा नक्षत्र में May 17, 2026 से October 09, 2026 तक गोचर और February 08, 2027 से June 03, 2027 तक।

व्याख्या

शनि के उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र के गोचर के दौरान, जातक शांति और खुशी की गहरी भावना और बीमारियों और रोगों से छुटकारा पाने का अनुभव करता है। यह समय जातक को मजबूत स्वास्थ्य और खुशी प्राप्त करवाता है, जिससे जातक जीवन में पूरी तरह से समृद्ध होने और भलाई का कार्य करने में समर्थ हो पाते हैं।

शनि के उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र के गोचर के दौरान, जातक को मानसिक तनाव हो सकता है, साथ ही उन्हें दुःख चिंता भी हो सकती है। चिंताएँ उन्हें घेर सकती हैं, जिससे उनके जीवन में अशांति हो सकती है व दुःख भी हो सकता है। इस अवधि के दौरान आगे की भावनात्मक उथल-पुथल को रोकने के लिए इन भावनाओं को संबोधित करना आवश्यक है।

शनि के विशाखा नक्षत्र के गोचर के दौरान, जातक मानसिक शुद्धता के साथ साथ आत्मविश्वास के बढ़ने और खुशी की अनुभूति का अनुभव कर सकते हैं। धीरज का अनुभव होने के साथ, जातक को अपने मार्ग में आने वाली समस्याओं का सामना करने की शक्ति प्राप्त होगी, जिससे उनके जीवन में शांति और आशावादी द्रष्टिकोण की भावना बढ़ने लगती है।

मंत्र

हिंदू धर्म में माना जाता है कि मंत्र, जो विशेष जप होते हैं, उनके उच्चारण से उत्पन्न कंपनात्मक अनुनाद के कारण शरीर, मन और आत्मा पर शांतिपूर्ण प्रभाव पड़ता है। निम्नलिखित मंत्र विशेष रूप से शनि के लिए शांतिदायक प्रभाव माने जाते हैं।

ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥
Om Pram Preem Praum Sah Shanaishcharaaya Namaha ||

ॐ भग-भवाय विदमहे मृत्यु-रूपाय धीमहि तन्नो सौरि: प्रचोदयात् ॥
Om Bhaga-Bhavaaya Vidmahe Mrityu-Roopaaya Dheemahi Tanno Saurih Prachodayaat ||

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ||
Neelanjanasamabhaasam Ravi-putram Yamaagrajam |
Chayamartanda-sambhutam Tam Namami Shanaishcharam ||

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गृध स्थितस्त्रास करो धनुष्मान ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽसतु महयं वरदो महात्मा ॥
Neeladyutih Shooladharah Kiriti Gridh Sthitastrasa Karo Dhanushmaan |
Chaturbhujah Suryasutah Prashantah Sadaa'satu Mahayam Varado Mahatma ||

प्रदान किए गए मंत्र सामान्य मंत्र हैं जिन्हें, शास्त्रों में उल्लेखित अनुसार, प्रतिदिन 108 बार जपने का निर्देश दिया गया है। इच्छित प्रभाव प्राप्त करने के लिए इन मंत्रों के सही उच्चारण के संबंध में किसी जानकार व्यक्ति से मार्गदर्शन लेना अनुशंसित है।

उपाय

शनि दोष के प्रभावों को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता, न ही वे किसी व्यक्ति के जीवन पर पूर्ण रूप से हावी हो सकते हैं, क्योंकि जन्म कुंडली में अन्य ग्रह भी सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। हालांकि, प्राचीन ग्रंथों में शनि द्वारा उत्पन्न चुनौतियों को कम करने के लिए कुछ उपाय बताए गए हैं। यहाँ कुछ प्रभावी उपाय दिए गए हैं:

- **भगवान हनुमान की पूजा करें:** हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ करना, विशेष रूप से मंगलवार और शनिवार को, शनि देव के अशुभ प्रभावों को कम करने में सहायक माना जाता है।
- **शनि मंत्रों का जाप करें:** शनिवार को शनि संबंधित मंत्रों का जाप करने से शनि साढ़े साती के दौरान शांति और संतुलन बना रहता है। इसके अतिरिक्त, भगवान श्रीरामचंद्र के पिता राजा दशरथ द्वारा रचित शनि स्तोत्र का पाठ करने से भी शनि देव प्रसन्न होते हैं।
- **तेल का दीपक अर्पित करें:** शनिवार को काले तिल युक्त तेल का दीपक जलाकर पीपल के पेड़ के नीचे रखने से शनि दोष के प्रभाव को कम किया जा सकता है। यह उपाय हमारे पूर्वजों द्वारा अपनाया जाता रहा है।
- **कौवों और पक्षियों को भोजन कराएं:** चूंकि शनि देव का वाहन काला कौआ है, इसलिए नियमित रूप से कौवों और अन्य पक्षियों को भोजन कराना उन्हें प्रसन्न करने का एक प्रभावी उपाय माना जाता है।
- **प्रदोष काल में मंत्रों का जाप करें:** शनिवार को प्रदोष काल (संध्या समय) में शनि श्लोक, हनुमान चालीसा और अन्य शनि संबंधित मंत्रों का जाप करना शुभ माना जाता है। यदि किसी शनिवार को प्रदोष व्रत पड़ता है (शनि प्रदोष व्रत), तो इस व्रत का पालन करना विशेष रूप से शुभ माना जाता है और इससे शनि देव व भगवान शिव दोनों की कृपा प्राप्त होती है।
- **काले रंग की वस्तुओं का दान करें:** जरूरतमंदों को काले रंग की वस्तुएं दान करने से शनि देव की कृपा प्राप्त होती है और साढ़े साती के अशुभ प्रभाव कम किए जा सकते हैं।
- **दूसरों की सहायता करें:** जरूरतमंदों की सहायता करने से शनि देव की कृपा प्राप्त होती है, क्योंकि वैदिक ज्योतिष के अनुसार शनि कर्म के स्वामी माने जाते हैं। विशेष रूप से वृद्धों, दिव्यांगों और अनाथों की सेवा करना अत्यंत शुभ माना जाता है और इससे शनि देव प्रसन्न होते हैं।

यदि इन उपायों को श्रद्धा और समर्पण के साथ किया जाए, तो शनि दोष के प्रभावों को कम किया जा सकता है और जीवन में संतुलन और शांति लाई जा सकती है।

गोचर वेध और विपरीत वेध स्थिति

चूंकि शनि आपकी कुंडली में 4th से होकर गुजर रहा है, इसलिए इस अवधि के दौरान कोई गोचर वेध या विपरीत वेध आप पर प्रभाव नहीं डालता है। इसका मतलब है कि इस ग्रह गोचर का प्रभाव अबाधित रहता है, जिससे इसके प्राकृतिक प्रभाव, चाहे वे लाभकारी हों या चुनौतीपूर्ण, अन्य ग्रहों के किसी भी हस्तक्षेप के बिना पूरी तरह से प्रकट होते हैं।

Disclaimer: All astrological calculations are based on vedic rules & scientific equations and not on any published almanac. Though all efforts have been made to ensure the accuracy of all published reports and calculations, we do not rule out the possibility of any unexpected errors. Therefore, Astroica cannot be held responsible for the decisions that may be taken by anyone based on this report. Astroica assumes no liability for any decisions made based on output from our calculations or reports. The reports or remedies should not be used as substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as a financial or legal advisor, doctor, psychiatrist etc. Information, forecasts, predictions, reports and remedies provided by Astroica should be taken strictly as guidelines and suggestions.

ASTROICA.COM
www.astroica.com
+91 481 2970053
support@astroica.com